

ऋषिपंचमीव्रतकथा भाषा ॥

दोहा—वन्दों श्रीजिनराजके, चरणकमल गुणहीर।
भवसमुद्रतारणतरण, हरणसकल भवपीर ॥१॥
बन्दोंजिन वाणीसुभग, जाते दुरित नशाय।
कथा पंचमीकी कहूं, गुरु के लागों पांय ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

राज गृह नगरी शुभ वसै। श्रेणिक महाराज अतिलसै ॥
एकदिवसबन्देजिनराजा। श्रेणिकप्रश्नकियासुखकाजा ॥३॥
व्रतपंचमीकहो जिनदेवा। किनपायो फलकर व्रत सेवा ॥
तवगणधर बोलेसुनसंता। हस्तनागपुर बसे महंता ॥ ४ ॥
धनपतिनगरसेठतहंबसै। कमल श्री वनिता गृह लसै ॥
पुत्र सुभविकदत्ततिसगेह। भयो पुनीतमदनसमदेह ॥ ५ ॥
धनपतिऔरविवाहीत्रिया। नामरूप श्रीपति अतिप्रिया ॥
तबकमलश्रीअतिदुखसहै। पुत्रसहितन्यारेगृहरहै ॥ ६ ॥
धनपति रूप श्री आनन्द। वन्धुदत्त सुत उपजो चंद ॥
ज्यों ज्यों वड़ेसयानेभये। त्योंत्योंसकलकलागुणलये ॥ ७ ॥
एकदिवसमिलदोनोंभ्रात। धन बिढ़वनकोकहियेबात ॥
तात मात आनंदित भयो। रत्नदीपको आयसुदयो ॥ ८ ॥
संगलये योद्धा वहु धीर। लये पाट अम्बर वर चीर ॥
वणिजयोग्यलीनेसबसाज। रत्नाभूषणवर गजराज ॥ ९ ॥

भविकदत्त मातासे बात । कही वनिजको पठवंततात ॥
बन्धुदत्तपुनि संग सुचले । औरभिलोगसंगहैंभले ॥ १० ॥
सुनमाता तबधधकोहियो । तुम बिछुड़े सुत कैसे जियो ॥
तुमगृह मंडनकुलआधार । तुमबिनसब्बसूनो संसार ॥ ११ ॥
अरुतुम संग सोतिकापूत । सो व्यसनी सुनियतहै धूर्त ॥
जोहठ पुत्र वणिजकोजाउ । तोधूर्तकोमतपतिआउ ॥ १२ ॥
नदी नखी जो शृंगी जीव । अरु दुर्जन करशस्त्रसदीव ॥
अरुवेश्याकेघरमेंबास । तिनकासुतमतकरोविश्वास ॥ १३ ॥
यह माताकी सुनि कर बात । रोम २ आनन्दोगात॥
चलतशकुन सबनीकेभये । चलतरसागर तट गये ॥ १४ ॥
तहां भरे प्रोहन जो अपार । वस्तुगिणत बाढ़े विस्तार ॥
गये तिलक पट्टनके तीर । जामें कोई जाय न धीर ॥ १५ ॥
भविकदत्त चितकीनोंचाव । गयो नगर में कर उच्छाव ॥
शून्य नगर ना कोई बसै । वस्तु बजारहजारों लसै ॥ १६ ॥
निर्भयभयो गयो सो तहां । चैत्यालय जिनवर को जहां ॥
बंदेचंद्रप्रभूजिनराज । सुफलजन्मतिनमानों आज ॥ १७ ॥
बन्धुदत्त ने कीनों द्रोह । यान चलाये छोड़ो मोह ॥
कुछयक दिनमें पहुंचेतहां । रत्नद्वीपपट्टन है जहां ॥ १८ ॥
भविकदत्तफिरआयोथान । शून्य देख मन भयो मलान ॥
मातावचनसुमरमनधीर । फिर आयो जिनवरकेतीर ॥१९॥
इतनी बात यहां ही रही । अब यह कथा मातपर गई ॥
पुत्र मोहकी व्यापीपोर । कमल श्रीमत धरे न धीर ॥२०॥
क्षण २ दीर्घले निश्वास । भूली सुधिबुधि भूख न प्यास ॥
संगसखीजो स्यानीलई । अवधि ज्ञानमुनिवरढिंगगई ॥२१॥
वन्दि मुनीश्वर पूछे सोई । जासे पुत्र मिलन अब होई ॥

जासेसुख परमानंदलहो । विछुरापुत्र मिलैसोकहो ॥ २२ ॥
सुने बचन तब मुनिवरकहैं । ज्यासों रोगशोक सबदहैं ॥
जासे स्वर्गमुक्तिफलहोइ । व्रत पंचमीकरोभविलोइ ॥ २३ ॥
जोड़े कमलश्री कर दोइ । कहो मुनींद्रकौन विधिहोइ ॥
सुनिधुनिमुनिबोलेअभिराम । मासअषाढ़सुक्खकाधाम २४
जबहिशुक्रपंचमिदिन होइ । तबहीव्रतकीजे भविलोइ ॥
व्रतकेदिनछोड़ो आरंभ । जिनवरजजोतजोसबदंभ ॥ २५ ॥
वर्षपंच अरुमासहि पंच । येसब व्रत पेंसठ सुनसंच ॥
जब यह व्रत पूरे हों लोइ । यथाशक्ति उद्यापन होइ ॥२६॥
लीनो व्रत कमलश्री भाय । सब दुख ताके गये पलाय ॥
कथासुभविकदत्तकीठहीं । नगरभ्रमोसोगयोनहिं कहीं ॥२७॥
पहुंचो राजाके दरबार । दिन आथयो भयो अंधिकार ॥
तहां न कोई मानव रहै । कासोंबात चित्तकी कहै ॥ २८ ॥
नृपकी सुता रूपगुण खान । बोली तासों कर सन्मान ॥
अहोधीरतुमआयेयहां । कोनजातिपुर निवसो कहां ॥२९ ॥
कौन भांतितुम आगमभयो । यह सन्देह भयो मोनयो ॥
तासे भविकदत्त वृत्तांत । अपनोकहोभयो तब शांत ॥३०॥
सुनपुनि राजकुंवरि यों कहै । एक महाराक्षस यहं रहै ॥
तानेपुरकीन्हों विध्वंशा । नरनारिनकारहा न वंशा ॥ ३१ ॥
वहपुत्री कर राखो मोहि । ना जानों अब कैसी होहि ॥
तुम्हेंदेख बहकरिहैक्रोध । सदालेत मानुष का शोध ॥३२॥
अब मैं एकजो तुमसे कहों । मैं द्वारे मंदिर के रहों ॥
तुमभीतर रहिदेउकिवारा । तोवासेकुछहोइ उबारा ॥ ३३ ॥
कुंवर राखिदृढ़ दये किवारा । आप रही मंदिर के द्वारा ॥
तबैनिशाचर आयो तहां । पुत्री मंदिर बाहर जहां ॥ ३४ ॥

सो हठकर मंदिर में गयो । देखकुंवर प्रमुदितमन भयो ॥
अबमेरेसीझेसबकाज । तुमदर्शन पायो मैं आज ॥ ३५ ॥
तुमतो मेरे मित्र निदान । कन्या राखी तुम्हरे जान ॥
अबमोकोतुमअतिसुखदेऊ । कन्याराजपाटसबलेऊ ॥३६॥
तबहि असुरनेकियो बिवाह । कन्या दे कीन्हों उत्साह ॥
भविकदत्तअरुराजकुमारी । सुखसेरहतसुमहलमझारी ॥३७॥
सम्र खने मंदिर के रहैं । तातमात की सब सुधि कहैं ।
यहतोलब्धिसुइलकोभई । कथा जो बंधुदत्त की ठई ॥ ३८ ॥
बस्तुबेच अरु लीनी नई । नफा न एक दाम की भई ॥
सोभरयानदेशको चले । बीचनीचतस्करबहुमिले ॥ ३९ ॥
तिन मिल लूट लयो सब संग । कठिन कष्टसे छोड़े नंग ॥
आयेफेरतिलकपुरथान । भविकदत्तअवलोकेजान ॥ ४० ॥
दम्पति लखि आनंदितभये । तबसब मिल आगे होलये ॥
बन्धुदत्तपावोंपड़गयो । तुम बिनभ्रातमहादुखलयो ॥ ४१ ॥
चोरों लूट लये हम सबे । कठिन कष्ट से छोड़े अबै ॥
भविकदत्तहंसबोलोवीर । कछु शंकामतकरोशरीर ॥ ४२ ॥
मेरे बहु लछमी भंडार । रत्न जहाज भरो इक सार ॥
ऐसे कह सब गृह में गये । वस्त्राभूषण सबको दये ॥ ४३ ॥
षटरस व्यंजन भोजन करे । तासे सबहि कष्ट परिहरे ॥
कर सन्मान यानभरदये । सर्व लोगप्रमुदितमनभये ॥ ४४ ॥
बन्धुदत्त विनवै कर सेव । अब तुम चलो देश को देव ॥
धर्म धुरंधर कुल आधार । तुम समनहींपुरुषसंसार ॥ ४५ ॥
तात मातके दर्शन करो । यासे सकल कष्ट परिहरो ॥
अरुभावजसेबिनतीकरी । सुनधुनिसोबोलीगुणभरी ॥ ४६ ॥
अब प्रिय जिय कोजे सतभाव । देखैं कमल श्री के पांव ॥

अरुसबमिलजुकहीहठबात । भविकदत्तमबमानीभ्रात ॥४७॥
बनिता सहितचढ़ोसोजहाज । त्रिय बोलीभूलीप्रियसाज ॥
देव अनर्घ दिया संदूक । वस्त्राभरण भरे गई चूक ॥ ४८ ॥
सुनी धनी वाणी निजत्रिया । ऋद्धिसिद्धिबिनकम्पोहिया ॥
भविकदत्तआतुरहोधाय । नगरमध्यसोपहुंचोजाय ॥ ४९ ॥
बन्धुदत्त चित चिंतो क्रूर । भ्रातहिछांड़ गयो पुनि दूर ॥
वणिकोसहितमंत्रतिनकियो । सबहि दानमनवांछितदियो॥५०॥
पहुंचे जाय समुदके तीरा । निज नगरी आये घर धीरा ॥
मिलेसबहिजनगणअरुतात । मात मिलोप्रमुदितमन गात ॥
देख अपूर्व वस्तु संयोग । भये सर्व विस्मय युत लोग ॥
अरुसुंदरिघरभीतर लई । रूप स्त्री आनंदित भई ॥ ५२ ॥
ताहि देख सब पुर नरनारी । कोई नहीं तास उनहारी ॥
माता बन्धुदत्त से कहै । यहसुंदरिदुःखित क्योंरहै ॥ ५३ ॥
कौननगरीकिसकीयहधिया । किन उपकारसुतुमपरकिया ॥
सुनध्वनिबन्धुदत्तमुखइसो । रतन द्वीपसागरमेंवसो ॥ ५४ ॥
पृथ्वीपाल नृपतिकी सुता । राजादई हमें गुणयुता ॥
मात तात गृहकीसुधिकरै । अखिलदेखधीरनहिंधरै ॥ ५५ ॥
हमतुमविननाकियोविवाह । सुन ध्वनिसोआनंदोसाह ॥
ऐसेही सबसाथिन कही । तब सब केमनआईसही ॥ ५६ ॥
सुन सबके मनभयो उछाह । कीजे बंधुदत्तका व्याह ॥
शोधघड़ीपंडितनेकही । व्याह करो तिनदूजे सही ॥ ५७ ॥
कामिन गावें मंगल चार । बिविध, भांति दीनी ज्योंनार ॥
कुंवररहोमंदिरसतखनै । निंदिकर्मभुखजिन वरभनै ॥५८॥
करसाहब दृढ़दये किवार । त्यागे तिलक ताम्बूलाहार ॥
ऐसे यहां कथांतरहोइ । भविकदत्तसुधिकहै न कोइ ॥५९॥

भविकदत्त नगरी मे गयो । सब सामग्री ले आइयो ॥
देखशून्यथल लईपछार । मुखजंपे धिक् २ संसार ॥ ६० ॥
तब वहदेव भयो प्रत्यक्ष । भविकदत्तहम तुम्हरी पक्ष ॥
अबतुमहमकोआज्ञादेव । पुजवोंमन वांछितकरसेव ॥६१॥
भविकदत्तयहकहो निदान । पहुंचोंजाय मातके थान ॥
देवसुभगवहुलीनोराज । रत्नपटाम्बरगजअरुबाज ॥ ६२ ॥
चढ़ि विमान में पहुंचो तहां । कमल श्री पौढ़ी थी जहां ॥
देखविभूतिपुत्रको सोइ । सत्यकिधोंयहस्वप्ना होइ ॥ ६३ ॥
भविकदत्त बोलो वर वोर । मिलो माय मोको घरधोर ॥
सुने वचनतब संशयगयो । गहभर अंकपुत्रभेटयो ॥ ६४ ॥
बंधुदत्त जो कीनो पाप । कहा सर्व माता से आप ॥
माताबोली कर उत्साह । तासे बंधुदत्तकरे व्याह ॥ ६५ ॥
सो नित चित्त परिव्रतधरै । तासे मूढ़ व्याह विधिकरै ॥
सो तो बहू तुम्हारी आइ । ताको देहु पारनो जाइ ॥६६॥
वस्त्राभरन बहूके जिते । माताको पहिराये तिते ॥
अरु निजकरकीमुंदरीदई । बैठ सुखासनसोंतहं गई ॥ ६७ ॥
कमल श्री आवतहो देख । रूप श्री मन भई विशेख ॥
मिलींपरस्परजियसुखभयो । करसन्मानबैठकादयो ॥ ६८ ॥
कमल श्रीमंदिर पर गई । वचन सुनाय सो ठाढ़ी भई ॥
तबतिन जानी अपनीसास । पडीपांवदृढ़लईउसास ॥६९ ॥
अरुसुतकोआगमनसुनाइ । देभोजनगृह पहुंचीजाय ॥
भविकदत्तराजापरगयो । मिलराजाआनंदित भयो ॥ ७० ॥
तबै राय सुन सो वृतंत । क्रोधन सको सम्हारि महंत ॥
किंकर पठये पहुंचे जाय । बंधुदत्तकोलाये धाइ ॥ ७१ ॥
आये लोग संग के सबै । पूंछी तिन्हें सोंह दे तबै ॥

तिन राजासेसांचीकही । सबधनभविकदत्तको सही ॥७२॥
राजासुनतकोपअतिकियो । बन्धुदत्तकोदण्ड जु दियो ॥
अपनिसुतापुनिदीनीराइ । करविवाहमंदिरपहुंचाइ ॥७३॥
भविकदत्त माता गुण भरी । पुत्रलयो मैंने शुभ घरी
मैंव्रतकियोपंचमी तनो । जाते भयोअतुलधनघनो ॥ ७४ ॥
तिनभीधुनिसुनकेव्रतलियो । भावसहितविधिपूर्वक कियो ॥
उद्यापन विधिपूरणकरी । जाते भूरिलच्छि विस्तरी ॥७५॥
दोय २ सुत तिनकेभये । नित २ केरत महोत्सव नये ॥
भविकदत्तदीक्षाव्रतलयो । दशवेंस्वर्गजायसुर भयो ॥७६॥
भुगतेभोग परम सुखनयो । दयावन्तफिर मुक्तहिगयो ॥
श्रेणिकसुनतसबहिव्रतकरो । तिनसबघोरदुःखपरिहरो ॥७७
और जो करे भावसे कोय । ताकोस्वर्ग मुक्ति सुख होय ॥
सत्रहसौसत्तावनजान । मिती पौषसुदिदशमीमान ॥ ७८ ॥
हती कंतपुरमें रचिकथा । श्रीसुरेंद्र भूषण मुनियथा ॥
श्रावकपढ़ोसुनोधरध्यान । जासेहोयपरमकल्याण ॥ ७९ ॥

इति श्रीऋषिपंचमी व्रतकथा भाषा सम्पूर्णम् ॥

सुगंधदशमी व्रत कथा ।

चौपाई ॥

वर्द्धमान वंदो जिनराय । गुरु गौतम वंदों सुख दाय ॥
सुगंधदशमीव्रतकीकथा । वर्द्धमानसुप्रकाशीयथा ॥ १ ॥
मगधदेश राजगृह नाम । श्रेणिक राज करे अभिराम ॥
नामचेलनागृहपटरानि । चंद्ररोहिणी रूप समान ॥ २ ॥
नृप बैठो सिंहासन परे । वन माली फल लायो हरे ॥

करप्रणाम वच नृपसेकहो। चित्त प्रमोदसेठाड़ोरहो ॥ ३ ॥
वर्द्धमानआयेजिनस्वामि। जिनजीतोउद्यतअरिकाम ॥
इतनीसुनतनृपतिउठचलो। पुरजनयुतदलबलसेभलो ॥४॥
समोशरण बन्दे भगवान। पूजा भक्ति धार बहुमान ॥
नरकोठाबैठोनृप जाय। हाथ जोड़पछे शिरनाय ॥ ५ ॥
सुगंधदशमी व्रतफलभाषि। ता नरकी कहिये अवसाखि ॥
गणधर कहेंसुनोंमग्धेश। जंबूद्वीपविजयार्द्ध देश ॥ ६ ॥
शिवमंदिर पुर उत्तर श्रेणी। विद्याधर प्रीतंकर जैनी ॥
कमलावती नारिअतिरूप। सुर कन्या से अधिक अनूप ॥
सागरदत्त बसे तहां साह। जाके जिनव्रतमें उत्साह ॥
धनदत्तावनिता गृहकही। मनोरमा ता पुत्री सही ॥ ८ ॥
सुगुप्ताचार्य गृह आइयो। देख मुनींद्र दुःख पाइयो ॥
कन्यामुनिकी निंदाकरी। कुछ मनमेंनहिंशंकाधरी ॥ ९ ॥
नग्न गात दुर्गंध शरीर। पगट पने देही नहिं चीर ॥
मुखतांबूलहतोमुनिअंग। मानो सुखकोकीनोभंग ॥ १० ॥
भोजन अंतरायजबभयो। मुनि उठजायध्यानबनदयो ॥
समताभाव धरेंउरमांहिं। किंचित खेदचित्तमें नाहिं ॥ ११ ॥
वीतअवधिसमयकछुगयो। मनोरमा काकालसुभयो ॥
भईगधीपुनिकुकरीग्राम। अपर ग्रामभईसूकरीनाम ॥ १२ ॥
मगधसुदेशतिलकपुरजान। विजय सेनतहंकानृपमान ॥
चित्ररेखा ता रानीं कही। ता पुत्रीदुर्गंधाभई ॥ १३ ॥
एक समय गुरुवंदन गयो। पूजाकर बिनती को ठयो ॥
मो पुत्रोदुर्गंधशरीर। कहो भवान्तर गुण गंभीर ॥ १४ ॥
राजा बचन मुनीश्वर सुने। मुनि वृतान्त रायसे भने ॥
सबवृतांतहाजिलोजान। मुनिराजासेकहोबखान ॥ १५ ॥
सुनदुर्गंधा जोड़े हाथ। मो पर कृपा करो मुनिनाथ ॥

ऐसा व्रत उपदेशोमोहि। यासे तनु निरोग अबहोहि ॥१६॥
दयावन्त बोले मुनिराय। सुन पुत्री व्रत चित्त लगाय॥
समताभावचित्तमेंधरो। तुमसुगंधदशमीव्रतकरो ॥ १७ ॥
यहव्रत कीजे मनवचकाय। यासे रोग शोक सब जाय॥
दुर्गंधाविनवेनिकुताय। कहियेसविधिमहामुनिराय ॥ १८ ॥
ऐसे वचन सुने मुनि जबे। तब बोले पुत्री सुन अबे॥
भादोंशुक्लपक्षजबहोय। दशमीदिनआराधोसोय ॥ १९ ॥
चारों रस को धारा देव। मनमें राखो श्री जिनदेव॥
शीतलनाथकीपूजाकरो। मिथ्यामोहदूरपरिहरो॥ २० ॥
व्रतके दिन छोड़ो आरंभ। यासे मिटे कर्म का दंभ॥
याकेकरतपापक्षयजाय। सोदशवर्षकरोमनलाय ॥ २१ ॥
जब यह व्रत संपूर्णहोय। उद्यापन कीजे चित जोय॥
दशश्रीफलअमृतफलजान। नीबूसरससदाफलआन॥ २२ ॥
दश दीजे पुस्तक लिखवाय। यहविधिसबमुनिदईबताय॥
विधिसुनदुर्गंधाव्रतलयो। सबदुर्गंधततक्षणगयो॥ २३ ॥
व्रत करआयु जो पूरणकरी। दशवें स्वर्ग भई अप्सरी॥
जिनचैत्यालयवंदनकरे। सम्यक्भावसदाउरधरे॥ २४ ॥
भरत क्षेत्र तहंमगधसुदेश। भूति तिलकपुर वसे अशेश॥
राजामहीपालतहांजान। मदनसुन्दरीत्रियाबखान॥ २५ ॥
दशवें दिवसे देवी आन। ताके पुत्री भई निदान॥
मदनावलीनामधरतास। अतिसुरूपतनुसकलसुवास ॥२६॥
बहुत बात को करे बखान। सुरकन्या नाता उन्मान॥
कौसांबीपरमदननरेंद्र। रानीसती करे आनंद॥ २७ ॥
पुरुषोत्तम सुतसुन्दरजान। विद्यावंत सुगुण की खान॥
जोसुगंधमदनावलिजाय। सो पुरुषोत्तमकोपरनाय॥ २८ ॥

राजा मदनसुंदरी बाल । सुखसे जात न जानो काल ॥
एकदिवसमुनिवरवंदियो । धर्मश्रवणमुनिवरपरकियो ॥२९॥
हाथ जोड़ पूछे तब राय । महा मुनींद्र कहो समझाय ॥
मोगृहरानीमदनावली । ता शरीरसौरमताभली ॥ ३० ॥
कौन पुण्य से सुभग सुरूप । सुर वनितासेअधिक अनूप ॥
राजावचनमुनीश्वरसुने । सबवृतांतरायसे भने ॥ ३१ ॥
जैसे दुर्गंधावृत लहो । तैसी विधि नरपति से कहो ॥
सुने भवांतरजोड़ेहाथ । दिक्षावृतदीजेमुनिनाथ ॥ ३२ ॥
राजाने जब दिक्षा लई । रानी तबे अर्जिका भई ॥
तप करअंतस्वर्गकोगई । सोलमस्वर्गप्रतेंद्रसोभई ॥ ३३ ॥
वाइस सागर कालजो गयो । अंत काल ता दिवसे चयो ॥
भरतसुक्षेत्रमगधतहंदेश । वसुधाअमरकेतुपुरवेस ॥ ३४ ॥
ता नृपग्रेह जन्म उनलहो । जो प्रतेंद्र अच्युत दिव कहो ॥
कनिककेतुकंचनद्युतिदेह । बनिता भोगकरेशुभग्रेह ॥ ३५ ॥
अमरकेतु मुनि आगमभयो । कनिक केतु तहं बन्दनगयो ॥
सुनो सुधर्मश्रवणसंयोग । तजेपरिग्रहअरुभवभोग ॥ ३६ ॥
घातिघातियाकेवललयो । पुनअघातिहनिशिवपुरगयो ॥
वृतसुगंधदशमीविख्यात । ताफलभयोसुरभियुतगात ॥ ३७ ॥
यह वृत पुरुष नारिजो करे । सो दुःख संकट भूलि नपरे ॥
शहर गहेलीउत्तम बास । जैन धर्मकोजहां प्रकाश ॥ ३८ ॥
सब श्रावकवृतसंयम धरें । पूजा दान से पातक हरें ॥
उपदेशी विश्वभूषणसही । हेमराज पंडित ने कही ॥ ३९ ॥
मन वच पढे सुनेजो कोय । ताको अजर अमर पद होय ॥
यासेभविजनपढोत्रिकाल । जो छूटेंविधिकेभ्रमजाल ॥ ४० ॥

इति श्रीसुगंधदशमीव्रतकथा भाषा संपूर्णम् ॥

अनंतचौदश व्रतकथा

दोहा–अनंतनाथ बन्दों सदा, मनमें कर बहु भाव।
सुर असुर सेवत जिन्हैं, होय मुक्ति परचाव ॥ १ ॥

चौपाई ॥

जंबूद्वीप द्वीपोंमें सार। लख योजन ताका विस्तार ॥
मध्य सुदर्शन मेरु बखान। भरत क्षेत्र ता दक्षिणमान ॥ २॥
मगध देश देशों शिरमणी। राजगृह नगरी अतिवनी ॥
श्रेणिकमहाराजगुणवंत। रानीचेलनागृहशोभंत ॥ ३ ॥
धर्मवंत गुणतेज अपार। राजा राय महागुण सार ॥
एकदिवसविपुलाचलवीर। आयेजिनवरगुणगंभीर ॥ ४ ॥
चार ज्ञानके धारक कहे। गौतम गणधरसों संग रहे ॥
छहऋतुकेफलदेखेनयन। वनमालीलेचालोऐन ॥ ५ ॥
हर्ष सहित वनमाली भयो। पुष्प सहित राजा परगयो ॥
नमस्कारकरजोड़ेहाथ। मोपरकृपाकरोनरनाथ ॥ ६ ॥
विपुलाचल उद्यान कहंत। महामुनीश्वर तहां बसंत ॥
सुन राजाअतिहर्षितभयो। बहुतदान मालीकोदयो ॥ ७ ॥
सप्तध्वनि बाजे वाजंत। प्रजा सहित राजा चालंत ॥
देप्रदक्षिणाबैठो राव। जिनवर देखकरोचितचाव ॥ ८ ॥
द्वै विधि धर्मकहो समझाय। यासे पाप सर्व जर जाय ॥
खग तहं आयो एक तुरंत। सुंदर रूप महागुणवंत ॥ ९ ॥
नमस्कार जिनवरको करो। जय जयकारशब्दउच्चरो ॥
ताहिदेखआश्चर्यितथयो। राजाश्रेणिकपूछतभयो ॥ १० ॥
सेना सहित महागुणखानि। को यह आयोसुंदरखाणि ॥

याकोबालकहोसमझाय । ज्ञानवंत मुनिवरतुमआय ॥ ११ ॥
गौतम बोले बुद्धि अपार । विजया नगर कहो अतिसार ॥
मनो कुंभ राजा राजंत । श्रीमती रानीको कंत । १२ ॥
ताका पुत्र अरिंजय नाम । पुण्यवंत सुंदर गुणधाम ॥
पूर्वतप कीनो इनजोय । ताका फलभुगतेशुभसोय ॥ १३ ॥
ताकी कथा कहूं विस्तार । जंबू द्वीप द्वीपों में सार ॥
भरतक्षेत्र तामें सुखकार । कोशलदेश विराजे सार ॥ १४ ॥
परम सुखदनगरीतहंजान । विप्र सोमशर्म्मा गुणखान ॥
सोमिल्या भामिनताकही । दुखदारिद्रकोपूरिनमही ॥ १५ ॥
पूर्व पाप किये अतिघने । ताको दुःख भुगतही बने ॥
सुनराजा याका वृतांत । नगर २ सो भ्रमें दुःखान्त ॥ १६ ॥
देश विदेश फिरे सुखआश । तोहु न पावे सुक्खनिवास ॥
भ्रमतर सो आयोतहां । समोशरणजिनवरको जहां ॥१७॥
दो०—अनंतनाथजिनराजका, समोशरणतिहिबार ॥
सुरनर अति हर्षितभये, देखमहाद्युतिसार ॥ १८ ॥

॥ चौपाई ॥

विप्र देख अतिहर्षित भयो । समोशरण वन्दन को गयो ॥
वन्दिजिनेश्वर पूछे सोइ । कहापाप मैं कीनो होइ ॥ १९ ॥
दरिद्र पीड़ा दहे शरीर । सोतो व्याधि हरो गंभीर ॥
गणधरकहेंसुनोद्विजराय । अनन्तव्रत कीजेसुखदाय ॥२०॥
तबे विप्र बोलो कर भाय । किस विधिहोइ सोदेहुबताय ॥
किसप्रकारयाव्रतकोकरों । कहाविधान चित्तमेंधरों ॥२१॥
भादोंमास सुक्खकीखान । चौदशशुक्ल कही सुखदान ॥
करस्नान शुद्ध होजाय । तब पूजेजिनवरसुखदाय ॥ २२ ॥
गुरुवन्दना करे चितलाय । या विधिसे व्रतलेय बनाय ॥

त्रिकालपूजेश्रीजिनदेव । रात्रिजागरणकरसुख लेव ॥ २३ ॥
गीतरुनृत्य महोत्सवजान । धारा जिनवर करो वखान ॥
वर्ष चतुर्दश विधिसेधरे । ता पीछे उद्यापन करे ॥ २४ ॥
करे प्रतिष्ठा चौदह सार । या से पाप होइ जर क्षार ॥
झारीधारीअधिकअनूप । चरणकलशदेवेशुभरूप ॥ २५ ॥
दीवट झालर संकल माल । और चंदोवे उत्तम जाल ॥
छत्र सिंहासन विधिसे करे । ताते सर्वपाप परिहरे ॥२६॥
चार प्रकार दान दीजिये । याते अतुल सुक्ख लीजिये ॥
अन्तावस्था ले संन्यास । तातेमिले स्वर्गका बास ॥ २७ ॥
उद्यापन की शक्ति न होइ । कीजे व्रत दूनो भविलोइ ॥
विप्रक्रियाव्रतविधिसेआय । सर्वदुःखतसुगयाविलाय ॥२८॥
अंतकाल धरके संन्यास । ताते पायो स्वर्ग निवास ॥
चौथेस्वर्ग देव सो जान । महाऋद्धिताकेसोवखान ॥ २९ ॥
विजयार्द्धगिरि उत्तम ठौर । काचीपुर पत्तन शिरमौर ॥
राजातहंअपराजितवीर । विजयातासप्रियागम्भीर ॥ ३० ॥
ताका पुत्र अरिंजय नाम । लिनयहआयकरोसोप्रणाम ॥
कंचनमयसिंहासनआन । तापरभूप बैठौसुखखान ॥ ३१ ॥
व्योमपटलविनशतलखसंत । उपजो चित वैरागमहंत ॥
राजपुत्रको दयो बुलाय । आपलईदीक्षाशुभमाय ॥३२ ॥
सही परीषह दृढ़चित धार । ताते कर्म भये अतिक्षार ॥
घाति घातिया केवल भयो । सिद्धबुद्धसोपदनिर्मयो ॥३३॥
रानीने व्रत कीनो सही । देव देह दिव अच्युतलही ॥
तहांसुसुखभुगतेअधिकाय । तहांसेआयभयोनरराय ॥ ३४॥
राजऋद्धिपाई शुभसार । फिरतपकर विधिकीने क्षार ॥
तहांसेमुक्तिपुरीकोगयो । ऐसातिनव्रतकाफललयो ॥ ३५ ॥

ऐसा व्रत पाले जो कोइ । स्वर्ग मुक्ति पद पावे सोइ ॥
विनयसागरगुरुआज्ञाकरी । हरिकिलपाठचित्त मेंधरी ॥३६॥
तव यहकथाकरीमनलाय । यथा शास्त्र में वरणीआय ॥
विधिपूर्वकपालेजोकोइ । ताकोअजरअमरपदहोइ ॥३७ ॥
इति श्रीअनंतचौदशव्रतकथा सम्पूर्णम् ॥

रत्नत्रयव्रत कथा

दोहा—अरहनाथकोवन्दिके, वन्दोंसरस्वति पांय ॥
रत्नत्रयव्रत की कथा, कहूं सुनो मनलाय ॥ १ ॥
॥ चौपाई ॥
जंवूद्वीप भरत शुभ क्षेत्र । मगध देश सुखसम्पति हेत ॥
राजगृहतहांनगरवसाय । राजा श्रेणिकराजकराय ॥ २ ॥
विपुलाचल जिनवीरकुंवार । केवलज्ञान विराजतसार ॥
मालीआय जनावो दयो । तत्क्षण राजा वंदनगयो ॥ ३ ॥
पूजा वंदनकर शुभसार । लागो पूछन प्रश्न विचार ॥
हेस्वामी रत्नत्रयसार । व्रतकहिए जैसा व्यवहार ॥ ४ ॥
दिव्यध्वनिभगवानवताय । भादोंसुदिद्वादशि शुभभाय ॥
करस्नान स्वच्छ पटश्वेत । पहिनोजिनपूजनके हेत ॥५॥
आठोद्रव्यलेय शुभजाय । पूजो जिनवर मनवचकाय ॥
जीर्णन्यूतन जिनके ग्रेह । विंवधरावो तिनमें तेह ॥ ६ ॥
हेमरूप्य पीतलके यंत्र । तांवा यथा भोजके पत्र ॥
यंत्रकरो बहुमन थिरदेउ । रत्नत्रयकेगुण लिखलेउ ॥ ७ ॥
निश्शंकादिदर्शनगुणसार । संशयरहितसो ज्ञान अपार ॥
अहिंसादि महाव्रतसार । चारित्र के ये गुणहैंधार ॥ ८ ॥
ये तीनों के गुणहैं आदि । इन्हें आदि जेते गुण वादि ॥

शिवमार्गके साधन हेत । ये गुण धारेव्रती सुचेत ॥ ९ ॥
भादोंमाघ चैत्र में जान । तीनोकाल करो भविआन ॥
याविधितेरहवर्षप्रमाण । भावनाभावेगुणहिनिधान ॥१०॥
लवंगादि अष्टोत्तर आन । जपो मंत्र मनकर श्रद्धान ॥
पुनिउद्यापन विधिजोएह । कलशाचमरछत्रशुभदेह ॥११॥
संग चतुर्विधि को आहार । वस्त्राभरण देउ शुभसार ॥
बिंब प्रतिष्ठाआदिअपार । पूजोश्रीजिनहोभवपार ॥ १२ ॥
दो०—इसविधि श्रीमुखधर्मसुन, भनोचित्तधरभाय ॥
कौनेफल पायोप्रभू, सो भाषो समझाय ॥ १३ ॥

॥ चौपाई ॥

जंबूद्वीप अलंकृत हेर । रहो ताहि लवणो दधिघेर ॥
मेरुसेदक्षिणदिशिहैसार । है सोविदेहधर्म अवतार ॥ १४ ॥
कच्छवती सुदेश तहांवसे । वीत शोक पुर तांमें लसे ॥
वैस्त्रिवनामतहांका राय । करेराजसुरपतिसमभाय ॥ १५ ॥
वनमाली ने जनावोदयो । विपुलबुद्धि प्रभुवनमें ठयो ॥
इतनीसुननृपवंदनगयो । दानवहुतमालीकोदयो ॥ १६ ॥
हे स्वामी रत्नत्रय धर्म । मोसो कहो मिटै सब भर्म ॥
तवस्वामीनेसबविधिकही । जोपहिलेसोप्रकाशी सही ॥१७॥
पंचामृत अविशेकसुठयो । पूजाप्रभुकीकर सुखलयो ॥
जागिरनादिठयोबहुभाय । इसविधिव्रतकरविस्त्रिवराय ॥१८॥
भावसहित राजाव्रतकरो । धर्मप्रतीत चित्त अनुसरो ॥
षोड़शभावनाभावतभरो । अंतसमाधिमरणतिनकरो ॥ १९ ॥
गोत्र तीर्थंकर वांधोसार । जो त्रिभुवनमें पूज्यअपार ॥
सर्वार्थसिद्धिपहुंचोजाय । भयोतहांअहमेंद्रसुभाय ॥ २० ॥
हस्तमात्रतनुऊंचोभयो । तेंतिससागर आयुसोलयो ॥

दिव्यरूपसुखकोभंडार । सत्यनिरूपणअवधिविचार ॥ २१ ॥
सौ धमेन्द्र विचारी घरी । यच्छेश्वर को आज्ञा करी ॥
बंगदेशनिर्माण्योजाय । थापोसुधरापुर अधिकाय ॥ २२ ॥
कुंभपुर राजा तहांवसे । देवी प्रजावती तिस लसे ॥
श्रीआदिकतहांदेवीआय । गर्भ से सोधना कीनी जाय ॥२३॥
रत्न वृष्टि नृप अंगन भई । पन्द्रह मासलों बरसत गई ॥
सर्वार्थसिद्धिसेंसुरआय । प्रजावतीसुकुच्छउपजाय ॥ २४ ॥
मल्लिनाथ सो नामकोपाय । द्वेज चंद्रसम बढ़त सुभाय ॥
जबविवाहमंगलविधिभई । तबप्रभुचितविरागतालई ॥२५॥
दिक्षाधर वनमें प्रभु गये । घातिकर्म हनि निर्मलठये ॥
केवललेनिर्वाण सोजाय । पूजा करीसुरेशोआय ॥ २६ ॥
यहविधान श्रेणिक ने सुनो । व्रतलीने चित अपने गुणो ॥
भक्तिविनयकरउत्तमभाय । पहुंचे अपनेगृहकोआय ॥ २७ ॥
याविधि जो नर नारीकरे । सो भवसागर निश्चयतरे ॥
नलिनकीर्तिमुनिसंस्कृतकही । ब्रह्मज्ञानभाषानिर्मही ॥ २८ ॥

॥ इति श्रीरत्नत्रयव्रतकथा भाषा सम्पूर्णम् ॥

दशलक्षणव्रतकथा



दोहा–प्रथमवन्दि जिनराज के, शारदगणधरपांय ।
दशलक्षणव्रतकीकथा, कहूंअगमसुखदाय ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

विपुलाचल श्रीवीरकुंवार । आये भवभंजन भरतार ॥
सुनभूपतितहांवंदनगयो । सकललोकमिलिआनंदभयो ॥२॥

श्री जिनपूजे मनधर चाव । स्तुतिकरी जोड़कर भाव ॥
धर्मकथातहांसुनीविचार । दान शील तप भेदअपार ॥ ३ ॥
भवदुःख क्षायक दायक शर्म । भाषो प्रभु दशलक्षणधर्म ॥
ताकीसुनश्रेणिकरुचिधरी । गुरुगौतमसेविनतीकरी ॥ ४ ॥
दश लक्षण व्रत कथाविशाल । मुझसे भाषो दीन दयाल ॥
बोलेगुरुसुनश्रेणिकचंद्र । दिव्यध्वनिकहोवीरजिनेंद्र॥ ५ ॥
खंड धातुकी पूर्व भाग । मेरु थकी दक्षिण अनुराग
सीतोदाउपकंठो सही । नगरी विशालाक्षशुभकही ॥ ६ ॥
नामप्रीतंकर भूपति बसे । प्रीयकरी रानी तसु लसे ॥
मृगांकरेखासुतासुजान । मति शेखरनामासोप्रधान ॥ ७ ॥
शशिप्रभा ताको वरनारि । सुता काम सेना निरधार ॥
राजसेठ गुणसागरजान । शीलसुभद्रा नारिबखान ॥ ८ ॥
सुतामदन रेखातसु खरी । रूपकला लक्षण गुणभरी ॥
लक्षणभद्रनामा कुतवाल । शशिरेखानारीगुणमाल ॥ ९ ॥
कन्या तास घरे रोहिनी । ये चारों वरणी गुरु तनी ॥
शास्त्रपढ़ेंगुरुपासविचार । स्नेह परस्पर बढ़ा अपार ॥१०॥
मास वसंत भयो निरधार । कन्या चारो बनहि मंझार ॥
गईंमुनीश्वरदेखेतहां । तिन कोवंदनकोनोवहां ॥ ११ ॥
चारों कन्या मुनि से कही । त्रिया लिंग ज्यों छूटे सही ॥
ऐसाव्रतउपदेशो अबै । यासे नर तनु पावे सबै ॥ १२ ॥
बोलेमुनि दश लक्षण सार । चारों करो होहु भवपार ॥
कन्याबोलींकिम्कीजिये । किस दिनसेव्रतकोलीजिये ॥१३ ॥
तबगुरुबोले वचनरसाल । भादोंमास कहो गुणमाल ॥
धवलपंचमीदिनसेसार । पंचामृतअभिषेकउतार ॥ १४ ॥
पूजार्च्चनकीजे गुणमाल । जिन चौवीस तनी शुभसाल ॥

उत्तमक्षमाआदिअतिसार । दश सोब्रह्मचर्यगुणधार ॥ १५ ॥
पुष्पांजलिइसविधि दीजिये । तीनोंकाल भक्तिकीजिये ॥
इसविधिदशवासरआचरो । नियमितव्रतशुभकार्यकरो ॥१६॥
उत्तम दश अनशन करयोग । मध्यमव्रतकांजीकाभोग ॥
भूमिशयनकीजेदशराति । ब्रह्मचर्य पालोसुखपांति ॥ १७ ॥
इसविधि दशवर्ष जबजांय । तबतकव्रत कीजै धर भाय ॥
फिरव्रतउद्यापनकीजिये । दानसुपात्रोंकोदोजिये ॥ १८ ॥
औषधि अभयशास्त्रआहार । पंचामृतअभिषेकहिसार ॥
माड़नोरचिपूजाकीजिये । छत्रचमरआदिकदीजिये ॥ १९ ॥
उद्यापनकी शक्ति न होय । तो दूनो व्रत कीजे लोय ॥
पुण्यतनोसंचयभंडार । परभवपावेमोक्ष सोद्वार ॥ २० ॥
तबचारोंकन्योंव्रतलायो । मुनिवरभक्तिभावलखिदियो ॥
यथाशक्तिव्रतपूरणकरो । उद्यापनविधिसे आचरो ॥ २१ ॥
अंतकाल वे कन्या चार । सुमरण करो पंच नवकार ॥
चारोंमरणसमाधिसुकियो । दशवेंस्वर्गजन्मतिनलियो ॥२२॥
षोड़स सागर आयु प्रमाण । धर्म ध्यान सेवें तहां जान ॥
सिद्धक्षेत्र में करें विहार । क्षायक सम्यकउदय अपार ॥२३॥
सुभग अवन्तो देश विशाल । उज्जयनो नगरी गुणमाल ॥
स्थूलभद्रनामानरपती । रानीचारुसो अतिगुणवती ॥ २४ ॥
देव गर्भ में आये चार । ता रानी के उदर मझार ॥
प्रथम सुपुत्र देव प्रभु भयो । दूजोसुतगुणचन्द्रभाषियो ॥२५॥
पद्म प्रभा तीजो बलवीर । पद्म स्वारथी चौथो धीर ॥
जन्म महोत्सवतिनकोकरो । अशुभदोषगृहदोनों हरो ॥२६॥
निकल प्रभा राजा की सुता । ते चारों परनी गुण युता ।
प्रथमसुताब्रह्मीनाम । दुतियकुमारीसो गुणधाम ॥ २७ ॥

रूपवती तीजी सुकुमाल । मृगाक्ष चौथी सो गुणमाल ॥
करोव्याहघरकोआइयो । सकललोकघरआमन्दलियो ॥२८॥
स्थूल भद्रराजा इकदिना । भोग विरक्त भयो भवतना ॥
राजपुत्रको दीनो सार । वन में जाययोगशुभधार ॥ २९ ॥
तपकरउपजो केवलज्ञान । वसु विधिहनि पायोनिर्वाण ॥
अब वे पुत्र राजकोकरें । पुण्यकाफल पावें ते घरें ॥३०॥
चारोंबांधव चतुर सुजान । अहिनिशिधर्मतनोफलमान ॥
एकसमय विरक्तसोभये । आतमकार्यचिंतवतठये ॥ ३१ ॥
चारों बांधव दिक्षालई । वनमें जाय तपस्या ठई ॥
निजमनमें चिद्रूपाराधि । शुक्लध्यानकोपायो साधि ॥३२॥
सर्व विमल केवल ऊपनो । सुख अनंत तब ही सोठनो ॥
करोमहोत्सवदेवकुमार । जय २ शब्दभयोतिहिवार ॥ ३३ ॥
शेष कर्म निर्बल तिन करे । पहुंचे मुक्ति पुरी में खरे ॥
अगमअगोचरभवजलपार । दशलक्षणव्रतकेफलसार ॥३४॥
वीरजिनेश्वर कही सुजान । शीतल जिनके बाड़े मान ॥
गौतमगणधरभाषीसार । सुनश्रेणिकआयेदरबार ॥ ३५ ॥
जो यह व्रत नर नारी करे । ताके गृह सम्पति अनुसरे ॥
भट्टारक श्री भूषणवीर । तिनके चेला गुणगंभीर ॥ ३६ ॥
ब्रह्मज्ञान सागर सुविचार । कही कथा दशलक्षणसार ॥
मनवचनव्रतपालेजोइ । मुक्तिवरांगणाभोगेसोइ ॥ ३७ ॥

॥ इति श्रीदशलक्षणव्रतकथाभाषासम्पूर्णम् ॥

मुक्तावलीव्रतकथा ॥

दो०—ऋषभनाथकेपदनमों, भविसरोजरविजान ।
मुक्तावलिव्रतकी कथा, कहूं सुनो धरध्यान ॥ १ ॥

मगधदेश देशों में प्रधान । तामें राजगृह शुभथान ॥
राज्यकरे तहांश्रेणिकराय । धर्मवंतसबको सुखदाय ॥२॥
ता गृह नारि चेलनासती । धर्म शीलपूरण गुणवती ॥
इकदिन समोशरणमहावीर । आयो विपुलाचलपरधीर ॥३॥
सुन नृपअत्यानंदितभयो । कुटुम सहित वंदन को गयो ॥
पूजाकरबैठो सुख पाय । हाथजोड़कर अर्जकराय ॥ ४ ॥
हेप्रभु मुक्तावलि व्रतकहो । यह कर कौनेक्याफल लहो ॥
तब गौतमबोलेहर्षाय । सुनो कथा मुक्तावलि राय ॥ ५ ॥
याही जंबूद्वीपमझार । भरत क्षेत्र दक्षिण दिशि सार ॥
अंगदेश सोहे रमनीक । नगर बसे चंपापुर ठीक ॥ ६ ॥
नगरमध्य एकब्राह्मणबसे । नाम सोमशर्म्मा तसुलसे ॥
ता गृह एकसुताजोभई । यौवनमदकर पूरणठई ॥ ७ ॥
एक दिन देखे श्रीगुरु जबे । नग्न गात सो निंदेतबे ॥
अतिखोटेदुर्वचनकहाय । बहुतहीग्लानिचित्तमेंलाय ॥ ८ ॥
ताकर महापापबांधियो । अवधिव्यतीतेमरण जु कियो ॥
नरकजाय नानादुखसहे । छेदन भेदनजायनकहे ॥ ९ ॥
नरकआयु पूरीकर जोइ । भवभ्रमि द्विजगृहपुत्रीहोइ ॥
निर्नासिकापड़ातिसनाम । अतिदुर्गंधादेहनिकाम ॥ १० ॥
कोई ढिंग आवे नहिंतहां । क्रमकर बढी भई सो वहां ॥
अन्नपानकरदुःखितमहा । जूठनभखेकष्टअतिलहा ॥ ११ ॥
एकदिवस देखे मुनिराइ । करप्रणाम विनवे शिरनाइ ॥
कौनपापमैं कीनोदेव । मैं पायोअतिदुःख अभेव ॥ १२ ॥
तबमुनिवर पूर्व भवकहे । गुरु को निंदा से दुःखलहे ॥
तबदुर्गंधा जोड़ेहाथ । ऐसाव्रतदीजेमोहिंनाथ ॥ १३ ॥
यासे रोग शोक सबजाय । उत्तम भव पाऊं गुरुराय ॥

तब श्रीगुरुबोले हर्षाय। मुक्तावलीकरो मनलाय ॥ १४ ॥
तासे सर्वपाप जरजाय। सुखसम्पत्ति मिलेअधिकाय ॥
तबदुर्गंधाकहे विचार । कौनभांतिकीजे व्रतसार ॥ १५ ॥
तबमुनिवरइमवचनकहाइ । सुनोभेद व्रतका चितलाइ ॥
भादोंसुदिसप्तमिदिनहोइ । तादिनव्रतकीजेभविलोइ ॥ १६ ॥
प्रातसमय जिनमंदिरजाइ । पूजा कथासुनो मनलाइ ॥
सबआरंभतजोदिनमान । संयमशीलसजोगुणखान ॥१७॥
भोर भये जिन दर्शनकरो । शुद्ध अशनकीजेतबखरो ॥
दूजोव्रतपूर्ववतकरो । अश्विनवदिछठिपापनिहरो ॥ १८ ॥
तीजोव्रत कीजे उरधार । अश्विनवदितेरसि सुखकार ॥
करउपवासपालोगुणरसी । चौथोअश्विनसुदिग्यारसी ॥१९॥
पंचमव्रत कीजे मनलाइ । कार्तिकवदिबारसि सुखदाय ॥
फिरछठवांउपवाससुजान । कार्तिकशुक्लतीजगुणखान ॥२०॥
सप्तमव्रतजिनवरनेकहो । कार्तिकसुदिग्यारसिशुभलहो ॥
फेरकरोअष्टमव्रतलोइ । मार्गवदिग्यारसिजवहोइ ॥ २१ ॥
नवमोंव्रत मार्ग सुदितीज । ये व्रत धर्म वृक्षके बीज ॥
याविधिकरोनववर्षप्रमान । मनवचकायशुद्धताठान ॥ २२ ॥
जब व्रत पूर्ण होइ निदान । उद्यापन कीजे गुणवान ॥
श्रीजिनवरअभिषेककराइ । करोमाड़नोजिनगृहजाइ ॥२३॥
अष्ट प्रकारी पूजा करो । जन्म २ के पातक हरो ॥
यथाशक्तिउपकरणबनाय । श्रीजिनधामचढ़ावोजाय ॥२४॥
उद्यापनको शक्ति न होय । तो दूनो व्रत कीजे लोय ॥
सबविधिसुनदुर्गंधाबाल । मनवचतनव्रतलीनोहाल ॥ २५
गुरुभाषित तिनविधि सेकियो । पूर्वभवअघ पानीदियो ॥
ताफलनारिलिंगछेदियो । सौधर्मस्वर्गदेवसोभयो ॥ २६ ॥

तहांआयु पूरणकर सोय । चलतभयो मथुराको लोय ॥
श्रीधरराजा राजकरंत । ताकेसुतउपजोगुणवंत ॥ २७ ॥
नामपद्मरथ मंडितभयो । एक दिवस वनक्रीड़ा गयो ॥
गुफामध्यमुनिवरकोदेख । वन्दनकरसुनधर्मविशेष ॥२८॥
तहांपूछे मुनिवरसेसोय । तुमसेअधिक प्रभाप्रभुकोय ॥
तबमुनिवरबोलेसुनबाल । बासपूज्यजिनदीप्तिविशाल ॥२९॥
चंपापुर राजें जिनराज । तेज पुंज प्रभु धर्म जहाज ॥
यहसुनधर्मविषेचित्तदयो । समोशरणजिनवंदनगयो ॥ ३० ॥
नमस्कारकर दीक्षा लई । तपकर गणधर पदवी भई ॥
अष्टकर्मइसविधिसेजार । पहुंचो शिवपुरसिद्धिमझार ॥३१॥
लखोभव्यव्रतकासोप्रभाव । राजभोगिभयेशिवपुरराव ॥
जोनरनारिकरेव्रतसार । सुरसुखलहिपावेभवपार ॥ ३२ ॥

॥ इति श्रीमुक्तावलीव्रतकथासम्पूर्णम् ॥

श्रीरविव्रतकथा।

चौपाई ॥

श्री सुखदायक पार्स जिनेश। सुमति सुगति दाता परमेश॥
सुमरोंशारदपदअरविंद । दिनकरव्रतप्रगटोसानंद ॥ १ ॥
बाणारस नगरी सुविशाल । प्रजापाल प्रगटो भूपाल ॥
मतिसागरतहांसेठसुजान । ताकाभूपकरेसन्मान ॥ २ ॥
तासुत्रिया गुणसुंदरिनाम । सात पुत्र ताके अभिराम ॥
षटसुतभोगकरेंपरणीत । वालरूपगुणधरसुविनीत ॥ ३ ॥
सहस्रकूटशोभितजिनधाम । आयेयतिपतिखंडितकाम ॥
सुनमुनिआगमहर्षितभये । सर्वलोगवन्दनकोगये ॥ ४ ॥
गुरुवाणी सुनके गुणवती । सेठिन तब जो करीबीनती ॥

वृतप्रभुसुगमकहोसमभाय । जासेरोगशोगसबजाय ॥ ५ ॥
करुणानिधि भाषें मुनिराय । सुनो भव्यतुम चित्त लगाय ॥
जबआषाढ़सितपक्षविचार । तब कीजेअंतमरविवार ॥ ६ ॥
अनसन अथवालघुआहार । लवणादिकजोकरे परिहार ॥
नवफलयुत पंचामृतधार । वसुप्रकारपूजोभवहार ॥ ७ ॥
उत्तम फल इवयासी जान । नव श्रावक घर दीजे आन ॥
याविधिकरोनववर्षप्रमाण । यातेहोयसर्वकल्याण ॥ ८ ॥
अथवा एकवर्ष एकसार । कीजेरवि वृतमनहि विचार ॥
सुखाहुन ननिजघरकोगई । वृतनिंदासे निंदित भई ॥ ९ ॥
वृत निंदासे निर्धन भये । सातपुत्र अयोध्यापुर गये ॥
तहांजिनदत्तसेठगृहरहें । पूर्व दुःकृतका फललहें ॥ १० ॥
मातपितागृहदुःखितसदा । अवधिसहितमुनिपूछेतदा ॥
दयावंतमुनि ऐसेकहो । व्रतनिंदासे तुमदुःखलहो ॥ ११ ॥
सुनगुरुवचनबहुरिव्रतलयो । पुण्यकियोघरमेंधनभयो ॥
भविजनसुनोकथासम्बन्ध । जहांरहतथेवेसबनन्द ॥ १२ ॥
एकदिवस गुणधरसुकुमार । घासले आये गृहद्वार ॥
क्षुधावंतभावजपेगयो । दंतविनानहिंभोजनदयो ॥ १३ ॥
बहुरि गये जहां भूलोदन्त । देखोतासे अहि लिपटंत ॥
फणपतिकीतहांयिनसोकरी । पद्मावतिप्रगटीसुंदरी ॥१४॥
सुंदरमणिमय पारसनाथ । प्रतिमा पंचरत्नशुभ हाथ ॥
देकरकहो कुंवरकरभोग । करोक्षणकपूजासयोग ॥ १५ ॥
आनबिंब निजघरमें धरो । तिहंकरतिनकोदारिद्र हरो ॥
सुखविलसतसेवेसबनंद । दिनप्रतिपूजेंपार्सजिनेंद्र ॥ १६ ॥
साकेतानगरी अभिराम । जिनप्रसाद राचोशुभधाम ॥
करीप्रतिष्ठापुण्यसंयोग । आयेभविजनसंगसोलोग ॥ १७ ॥

संगचतुर्बिधिको सन्मान । कियोदियामन वांछितदान ॥
देखसेठ तिनकीसम्पदा । जायकहीभूपतिसेतदा ॥ १८ ॥
भूपतितब पूछो वृत्तन्त । सत्यकहो गुणधर गुणवन्त ॥
देखसुलक्षणताकोरूप। अत्यानन्द भयोसोभूप ॥ १९ ॥
भूपतिगृह तनुजा सुंदरी । गुणधरको दीनी गुण भरी ॥
करविवाहमंगलसानन्द । हयगयपुरजनपरमानन्द ॥ २० ॥
मनवांछितपायेसुखभोग । विस्मितभयेसकलपुर लोग ॥
सुखसेरहतबहुतदिनभये । तबसबबन्धुबनारसगये ॥ २१ ॥
मात पिता के परशे पांय । अत्यानन्द हृदय न समाय ॥
बिगटोबिषमविषमबियोग । भयोसकलपुरजनसंयोग ॥२२॥
आठसातसोलह के अंक । रविव्रतकथा रचीअकलंक ॥
थोड़ेअर्थग्रंथबिस्तार । कहेंकवीश्वरजोगुण सार ॥ २३ ॥
यहव्रतजोनरनारी करें । सो कबही दुर्गति नहिंपरें ॥
भावसहितसोसबसुखलहें । भानु कीर्तिमुनिवरइमकहें ॥२४॥
इति श्रीरविव्रतकथा सम्पूर्णम् ॥

पुष्पांजलि व्रतकथा ।

दोहा—वीरदेवकोप्रणमिकर, अर्चाकरोंत्रिकाल ।
पुष्पांजलिव्रतकीकथा, सुनोभव्यअघटाल ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

पर्बतविपुलाचलपरआय । समोशरण जिनबरकापाय ॥
तहंसुनराजाश्रेणिकराय । वन्दनचलेप्रियायुतभाय ॥ २ ॥
वन्दन कर पूछे नृप तबे । हे प्रभु पुष्पांजलि व्रत अबे ॥
मोसेकहोकरोंचितलाय । कोनेकरोकहाभईआय ॥ ३ ॥ ॥
बोलेगौतम बचनरसाल । जंबू द्वीप मध्य सो विशाल

सीतानदोदक्षिणदिशिसार । मंगलावतीसुदेशअपार ॥ ४ ॥
दोहा–रत्न संचयपुर तहां, वज्रसेन नृप आय ।
जयवती वनितालसे, पुत्रबिहानोथाय ॥ ५ ॥

॥ चौपाई ॥

पुत्रचाह जिन मंदिरगई । ज्ञानोदधि मुनि वंदित भई ॥
हेमुनिनाथ कहोसमभाय । मेरेपुत्रहोइ के नाय ॥ ६ ॥
दोहा–मुनिबोले हे बालकी, पुत्रहोइ शुभसार ।
भूमिछखंड सुसाधिहै, मुक्तितनोभरतार ॥ ७ ॥
सुनकेमुनिकेवचनतब, उपजो हर्ष अपार ।
क्रमसे पूरे मासनव, पुत्रभयो शुभ सार ॥ ८ ॥
यौवन वयस सोपायके, क्रीड़ा मंडपसार ।
तहांव्योमसे आइयो, खगभूपरतिसवार ॥ ९ ॥
रत्नशेखरकोदेखकर, बहुतप्रीति उरमांहि ।
मेघवाहनने पांचसो, विद्यादीनी ताहि ॥ १० ॥

॥ चौपाई ॥

दोनोमित्र परस्पर प्रीति । गये मेरु वन्दन तज भीति ॥
सिद्धकूट चेत्यालय वंदि । आये पंचचित्त आनंदि ॥ ११ ॥
ताकी सखो जनाई सार । वेग स्वयम्बर करो तयार ॥
भूरि भूप आये तत्काल । माल रत्नशेखरगलडाल ॥ १२ ॥
धूमकेत विद्याधर देख । क्रोधकियो मन माहिं विशेष ॥
कन्याकाजदुष्टताधरी । विद्याबल बहुमायाकरी ॥ १३ ॥
रत्नशेखर से युद्धसो करो । वहुत परस्पर विद्याधरो ॥
जीतोरत्नशेखरतिसवार । पाणिग्रहणकियोव्यवहार ॥ १४ ॥
मदन मजषा रानी संग । आयो अपने ग्रेह असंग ॥
वज्रसेनकोकरनमस्कार । माततासमनसुखअपार ॥ १५ ॥
एकदिनामंदिरगिर योग । पहुंचेमित्र सहित सब लोग ॥
चारणमुनिबंदेतिहिवार । सुनोधर्मचितभयोउदार ॥ १६ ॥

हे मुनि पूर्व जन्म सम्बन्ध । तीनों के तुमकहो निबन्ध ॥
तबमुनिकहेंसुनोचितधार । एकमृणालनगरसुखकार ॥ १७ ॥
नृप मंत्रीएकतहांश्रुतिकीर्ति । बन्धुमतीवनिताअतिप्रीति ॥
एकदिना बन क्रीड़ागयो । नारी संगरमतसोभयो ॥ १८ ॥
पापी सर्पसो भक्षण करी । मंत्री मृतक लखी निजनरी ॥
भयोविरक्तजिनालयजाय । दिक्षालोनीमन हर्षाय ॥ १९ ॥
यथाशक्ति तप कुछ दिन करो । पाछेभ्रष्टभयो तपटरो ॥
गृहआरंभकरनचितठनो । तबपुत्री मुख ऐसे भनो ॥ २० ॥
तातजोमेरुचढ़ोकिहिकाज । फिर भवसिंधुपड़ेतजलाज ॥
योंसुनप्रभावतीवचसार । मंत्रीकोपकियोअधिकार ॥ २१ ॥
तब विद्या को आज्ञा करी । पुत्री को ले बन में धरी ॥
विद्या जब बनमें लगई । प्रभावती मन चिंता भई ॥ २२ ॥
अरहंत भक्ति चित्तमेंधरी । तब विद्या फिर आई खरी ॥
हे पुत्री तेरा चित्त जहां । वे‌ओलपहुंचाऊं तहां ॥ २३ ॥
पुत्री कहीकैलाशकेभाव । जिन दर्शनकोअधिकहीचाव ॥
पूजाकरके बैठी वहां । पद्मावति आई सो तहां ॥ २४ ॥
इतने मध्य देव आइयो । प्रभावती तब पूछन लयो ॥
हे देवी कहिएकिसकाज । आयेदेवोदेवसोआज ॥ २५ ॥
पद्मावति बोलो बचसार । पुष्पांजलि व्रत है सुअवार ॥
भाद्रोंमास शुक्ल पंचमी । पंचदिवसआरंभनअमी ॥ २६ ॥
प्रोपध यथाशक्ति व्यवहार । पूजो जिन चौबोसी सार ॥
नानाविधिकेपुष्पजोलाय । कराएकमालाजोबनाय ॥ २७ ॥
तीनकाल वह माला देय । बहुत भक्ति से विनय करेय ॥
जपोजापशुभमंत्रविचार । याविधिपंचवर्षअवधार ॥ २८ ॥
उद्यापन कीजे पुनिसार । चार प्रकार दान अधिकार ॥
उद्यापनकी शक्ति नहोइ । तोदूनोव्रतकीजे लोइ ॥ २९ ॥
यह सुन प्रभावती व्रतलयो । पद्मावती कृपा कर दयो ॥

स्वर्गमुक्तिफलकादातार। हैयहपुष्पांजलिव्रतसार ॥ ३० ॥
दो०–पद्मावति उपदेश से, लीनाव्रत शुभसार।
पृथ्वीपरसोप्रकाशिके, कियोभक्ति चितधार ॥ ३१ ॥
तपविद्याश्रुतकीर्तिने, पाई अति जो प्रचंड।
प्रभावती व्रतखंड ने, आई सो बलबंड ॥ ३२ ॥

॥ चौपाई ॥

वासर तीन व्यतीते जबे। पद्मावत्ति पुनि आई तबे ॥
विद्यासबभागोतत्काल। करोसंन्यास मरणतिसवाल ॥३३॥
कल्प सोलहवें मध्यसोजान। देवभयोसो पुण्य प्रवाण ॥
तहांदेवने कियोविचार। मेरातात भ्रष्टआचार ॥ ३४ ॥
मैं सम्बोधों वाको अबे। उत्तम गति वह पावे तबे ॥
यहीविचारदेवआइयो। मरणसंन्यासतातकोकियो ॥ ३५ ॥
वाही स्वर्ग भयो सो देव। पुण्य प्रभाव लयो फलएव ॥
बंधुमती माता का जीव। उपजाताहीस्वर्ग अतीव ॥ ३६ ॥
दो०–प्रभावतीका जीव तू, रत्नशेखर भयोआय।
माताका जो जीव है, मदनमजूषा थाय ॥ ३७ ॥

॥ चौपाई ॥

श्रुतिकीर्तिको जीव जो तहां। मंत्री मेघ वाहन है यहां ॥
ये तीनोंके सुन पर्याय। भईसो चिंता अंग न माय ॥ ३८ ॥
सुनव्रतफलअरुगुरुकीवानि। भयोसुचितव्रतलीनोजानि ॥
अपनेथानबहुरिआइयो। चक्रवर्तिपदभोगसुकियो ॥ ३९ ॥
समय पाय वैरागसा भयो। राज भारसब सुत को दयो ॥
त्रिगुप्तिमुनिकेचरणोंपास। दिक्षालीनोपरमहुलास ॥ ४० ॥
रत्न शेखर दिक्षाली जबे। भये मेघ वाहन मुनि तबे ॥
भविजीवोंकोअतिसुखकार। केवलज्ञानउपार्जोसार ॥ ४१ ॥
घाति कर्म निर्मूल सुकरे। पाछे मुक्ति पुरी अनुसरे ॥

याविधिव्रतपालेजोकोइ । अजरअमरपदपावेसोइ ॥ ४२ ॥
इति श्री पुष्पांजलिव्रतकथा सम्पूर्णम् ।

नंदीश्वरव्रत कथा ॥

दो०—चरणनमोंजिनराजके, जाते दुरित नशाय ।
शारद वंदो भावसे, सद्‌गुरु सदा सहाय ॥ १ ॥
॥ चौपाई ॥
जंबू द्वीप सुदर्शन मेरु । रहो ताहि लवणो दधि घेर ॥
मेरुसेदक्षिणभारत क्षेत्र । मगधदेशसुखसम्पति हेतु ॥ २ ॥
राज गृह नगरी शुभ वसे । गढ़ मठ मंदिर सुंदर लसे ॥
श्रेणिकराजकरेसुप्रचंड । जिनलोनोअरियणपरदंड ॥ ३ ॥
पटरानी चेलना सुजान । सदा करे जिन पूजा दान ॥
सभा मध्यबैठो सो राय । वनमाली शिरनायो आय ॥४॥
दोकर जोड़ करे सो सेव । विपुलाचल आये जिन देव ॥
वर्द्धमानकोआगमसुनो । जन्मसुफलचित अपने गुनो ॥५॥
राजा रानी पुरजन लोग । वंदन चले पूजने योग ॥
चलत २ सो पहुंचेतहां । समोशरणजिनवरकाजहां ॥ ६ ॥
दे प्रदक्षिणा भीतर गये । वर्द्धमान के चरणों नये ॥
पुनिगणधरकोकियोप्रणाम । हर्षितचित्तभयोअभिराम ॥७॥
दशविधिधर्मसुनोजिनपास । जाते गयो चित्त का त्रास ॥
दोकरजोड़नृपति वीनयो । अतिप्रमोदमेरे मन्न भयो ॥ ८ ॥
प्रभु दयाल अब कृपाकरेव । व्रतनंदीश्वरकहो जिनदेव ॥
अरुसबविधिकहियेसमभाय । भावसहितयोंपूछोराय ॥९ ॥
अवधिज्ञान धरमुनिवरकहें । कौशलदेश स्वर्गसम रहें ॥
ताके मध्य अयोध्यापुरी । धनकण सुखीछत्तीसोकुरी ॥१०॥
तिहिपुर राज करे हरिसेन । त्याग तेग बल पूरणसेन ॥

वंशइक्ष्वाकु प्रगटचक्रवे । ताकीआनि खंडपटचवे ॥ ११ ॥
पाट वध रानी नृप तीन । गंधारी जेठी गुण लीन ॥
प्रियमित्रा रूपश्री नाम । साधेधर्मअर्थ अरुकाम ॥ १२ ॥
सुखसे रहत बहुत दिनभये । ऋतु बसंत कन राजागये ॥
जलक्रीड़ावनक्रीड़ाकरें । हास्य विलासप्रीतिअनुसरें ॥ १३ ॥
तावनमध्य कल्पद्रुममूल । चंद्रकांतिमणि शिलानुकूल ॥
मंडपलताअधिकविस्तार । चारणमुनिआयेतिहिवार ॥१४॥
अ.रिजय अमितंजय नाम । सामदयालु धर्म के धाम ॥
राजारानी पुरजननारि । देखेमुनितिनदृष्टिपसारि ॥ १५ ॥
सब नर नारि अनंदित भये । क्रीड़ातजमुनिवन्दनगये ॥
त्रियापुरुषचरणोंअनुसरे । अष्टद्रव्यसुनिपूजेखरे ॥ १६ ॥
धर्म ध्यान कहो मुनिराय । श्रद्धा सहित सुनो करभाय ॥
राजाप्रश्नकरीमुनिपास ।सुनो धर्म भयोचित्त हुलास ॥ १७ ॥
दलबलसहितसम्पदाघनी । और भूमिपट खंडजोतनी ॥
महापुण्य जोयहफलहोइ ॥ गुरुविनज्ञाननपावेकोइ ॥१८॥
बार २ विनवे कर सेव । पूर्व कहो भवान्तर देव ॥
अवधिज्ञानबलमुनिवरकहैं । परअहिक्षेत्रवनिकएकरहै ॥
सुखित कुंवेर मित्रता नाम । साधे धर्म अर्थ अरु काम ॥
जेष्ठ पुत्रश्रीवर्म्मकुमार । मध्यमजयवर्मा गुणसार ॥ २० ॥
लघुजयकीर्ति कीर्ति विख्यात । तीनोंशुभआनंदितगात ॥
एकदिवसउपजोशुभकर्म । वनमें आये मुनिसौधर्म ॥२१ ॥
सेठ पुत्र मुनिवर वंदियो । श्रीवर्म्मा जो अठाई लियो ॥
नंदीश्वरव्रतविधिसेपाल । भव २ पापपुंजकोजाल ॥ २२ ॥
अंतसमाधि मरण कोपाय । इस पुर वज्रबाहु नृपआय ॥
ताकेविमलारानीजान । तुमहरिसेनपुत्रभये आन ॥ २३ ॥
पूर्व व्रत पालो अभिराम । ताते लहो सुवखको धाम ॥
जयवर्म्माजयकीर्तिवीर । निकट भव्यगुणसाहसधीर ॥२४॥

वन्दे गुरुजी धुरंधर देव । मन वच काय करी बहुसेव ॥
तबमुनिपंच अनुव्रत दिये । दोनोंभावसहितव्रतलिये ॥२५॥
अरुनंदीश्वरव्रततिनलियो । अंतसमाधिमरणतिनकियो ॥
हस्तनागपुरशुभजहांबसे । तहांविमलवाहननृपलसे ॥२६॥
ताके नारि श्रीधरा नाम । आरिंजय अमितंजय धाम ॥
पुत्रयगलहमउपजेतहां । पूर्वपुण्यभलपायो जहां ॥ २७ ॥
गुरुसमीप जिन दिक्षालई । तपबल चारण पदवी भई ॥
यासे हम तुम पूर्व भ्रात । देखतप्रेम ऊपजो गात ॥ २८ ॥
पूर्व व्रत नंदीश्वर कियो । ताते राज चक्र पद लियो ॥
अबफिरव्रतनंदीश्वरकरो । तातेस्वर्गमुक्तिपदधरो ॥ २९ ॥
तब हरिसेन कहे कर जोर । व्रत नंदीश्वर कहो बहोर ॥
मुनिवरकहें द्वीपआठमो । तासनामनंदीश्वरनमो ॥ ३० ॥
ताकेचहुंदिशि पर्वत परे। अंजन दधिमुख रतिकरधरे ॥
तेरहतेरहदिशिदिशजान । येसबपर्वतबावनमान ॥ ३१ ॥
पर्वतपर्वत पर जिन ग्रेह । वह परिमाण सुनो कर नेह ॥
सौयोजनताकाआयाम । अरुपचासविस्तारसुताम ॥ ३२ ॥
उन्नति है योजन पच्चीस । सुर तहं आय नवा में शीश ॥
अष्टोत्तरसौ प्रतिमाजान । एक २ चैत्यालयमान ॥ ३३ ॥
गोपुर मणिमय केसुप्रकार। छत्र चमर ध्वजवंदनवार ॥
प्रातिहार्यविधिशोभाभली । तिनरवि कोटिसोमछविछली ॥
तासद्वीप में सुरपति आय । पूजा भक्ति करे बहु भाय ॥
देव अव्रतीव्रत नहीं करें । भावभक्ति करपातिक करें ॥३५॥
तासद्वीप सम्बन्धी सार । व्रत नंदीश्वरको अधिकार ॥
यहांकहोजिनवरसुप्रकाशि । आदिअनादिपुण्यकीराशि ॥
जो व्रत भव्य भाव से करें । भव २ जन्म जरामय हरें ॥
ताव्रतको सुनियेअधिकार। वर्ष २ में त्रय २ बार ॥ ३७ ॥

आषाढ़कार्तिकअरुजोफाग । शाखातीनकरो अनुराग ॥
आठोंदिनआठैंपर्यंत । भक्तिसहितकीजेव्रतसंत ॥ ३८ ॥
सातेंको एकासन करो । कर संयम जिनवर मनधरो ॥
आठेंकेदिनकरउपवास । जासेंछूटे कर्मका त्रास ॥ ३९ ॥
करोप्रथमजिनकाअभिषेक । जातेपातिक जायंअनेक ॥
अष्ट प्रकारी पूजा करो । मुख परमेष्टि पंच उच्चरो ॥
तादिनव्रत नंदीश्वरनाम । ताकाफलसुनियो अभिराम ॥
फलउपवासलक्षदशजान । श्रीजिनवरनेकरोबखान ॥ ४१ ॥
दूजे दिन जिन पूजा करो । पात्र दान दे पातिकहरो ॥
अष्टविभूतिनामदिनसोइ । तादिनएकासनकरलोइ ॥ २४ ॥
फलउपवाससहस्त्रदशहोइ । अबनीजोदिनसुनियेलोइ ॥
जिनपूजाकरपात्रहिदान । भोजनपानीभात प्रमाण । ४३ ॥
नामत्रिलोक सारदिनकहो । साठलाखप्रोषधफललहो ॥
चतुर्थदिनकरआमोदर्य । नामचतुर्मुखदिनसोहर्य ॥ ४४ ॥
तहांउपवासलक्षफलहोइ । पंचमदिनविधिकरियेसोइ ॥
जिनपूजाएकासनकरो । हयलक्षणजुनामदिनधरो ॥ ४५ ॥
फलचौरासी लक्ष उपास । जासे जायभ्रमण भव त्रास ॥
षष्टम दिन जिनपूजादान । भोजनभातआमिलीपान॥४६॥
तादिन नाम स्वर्गसोपान । व्रत चालीसलक्ष फलजान ॥
सप्तमदिनजिनपूजादान । कीजेभविजनकासन्मान ॥ ४७ ॥
सब सम्पत्तिनामदिन सोइ । भोजनभात त्रिवेलीहोइ ॥
फलउपवासलक्षकोजान । अष्टमदिनव्रतचितमें आन ॥४८॥
कर उपवास कथा रुचि सुनो । पात्र दानदेसुकृत गुनो ॥
इंद्रध्वजव्रतदिन तसनाम । सुमरोजिनवर आठोजाम ॥४९॥
तीनकोड़अतलाखपचास । यह फल होइ हरेसबत्रास ॥
यहविधिआठवर्षमेंहोइ । भावसहितकीजेभविलोय ॥ ५० ॥

उत्तम सातवर्षविधिजान । मध्यमपांच तीन लघुमान ॥
उद्यापन विधिपूर्वक सचो । वेदी मध्य माडनोरचो ॥५१॥
जिनपूजारुमहाअभिषेक । चंद्रोपमध्वज कलश अनेक ॥
छत्रचमरसिंहासनकरो । बहुविधिजिनपूजोअघहरो ॥५२॥
चारोदान सुपात्रहि देउ । बहुत भक्तिकर विनय करेउ ॥
बहुविधिजिनप्रभावनाहोइ । शक्तिसमानकरोभविलोय ५३
उद्यापन की शक्ति न होइ । तो दूनो व्रत कोजोलोइ ॥
जिनयहव्रतकीनोअभिराम । तिनपदलयोसुक्खकाधाम॥५४॥
यहव्रत पूर्वमहाफललियो । प्रथमऋषभजिनवरनेकियो ॥
अनंतवीर्यअपराजितपोल । चक्रवर्तिपदवीभई हाल ॥५५॥
श्रीपाल मैना सुंदरी । व्रत कर कुष्ट ब्याधि सबहरी ॥
बहुतकनरनारीव्रतकरो । तिनसबअजरअमरपदधरो ॥५६॥
सुनो विधान राय हरिसेन । अति प्रमोद मुख जंपेवैन ॥
सबपरिवारसहितव्रतलयो । मुनिवरधर्मप्रीतिकरदयो ॥५७॥
व्रतकर फिर उद्यापन करो । धर्मध्यानकर शुभ पदधरो ॥
अंतसमाधिमरणकोपाय । भयो देव हरिसेन सुराय ॥५८॥
पर्यायान्तर जैहे मुक्ति । श्रेणिक सुनी सकलव्रतयुक्ति ॥
गौतमकहोसकलअधिकार । सुनोमगधपतिचित्तउदार॥५९॥
जो नर नारी यह व्रत करें । निश्चय स्वर्गमुक्तिपद धरें ॥
संकट रोग शोकसबजाहिं । दुःख दरिद्रतादूरबिलाहिं ॥६०॥
यह व्रत नंदीश्वर की कथा । हेमराज सु प्रकाशो यथा ॥
शहर इटावा उत्तम थान । श्रावक करेंधर्मशुभध्यान ॥६१॥
सुने सदा ये जैन पुराण । गुणी जनोंका राखें मान ॥
तिहिठा सुना धर्मसम्बन्ध । कीनीकथाचौपई बंध ॥६२॥
कहें सुनें देवें उपदेश । लहें भाव से पुण्य अशेष ॥
जाकेनाम पापमिटिजांय । ताजिनवरकेवन्दोंपांय ॥ ६३ ॥

इति श्री नंदीश्वरव्रत कथा सम्पूर्णम् ॥

हमारे यहां निम्न लिखित जैनपुस्तकें मिलती हैं।

जैनग्रन्थ संग्रह।

इसमें ५० पुस्तकें हैं। और पुष्ट कागज पर सुन्दर टैप से छपी हैं और ऊपर से सुन्दर जिल्द बंधी है। यही एक पुस्तक परदेश में पास रखना काफी है। मूल्य प्रथम एक रु० था। अब ॥) आठ आने ही मे देंगे।

व्याख्यान रत्नमाला।

छपगई! छपगई!! छपगई!!!

जिस पुस्तक के लिये सभा प्रेमी पुरुष वर्षों से भटक रहे थे। वही आज छप कर तैयार हो गई। सचमुच ही यह व्याख्यानरूपी रत्नों की माला ही है। इस के धारण करने से लोग सभा में धर्राटे के साथ व्याख्यान दे कर जाति सुधार कर सकेंगे तथा धन धर्म विद्या बुद्धि की वृद्धि कर सकेंगे जो पुरुष सभा में व्याख्यान कहना सीखना चाहते हैं वह इस के मंगाने मे देरी न करें। की० ८ भाग की ।)

नवीनहोलीसंग्रह,एकवारअवश्यपढ़िये	)॥	हुक्का निषेध	)।
सांगीतमनोरमा (नौटंकीकीराहमें)	=)	दुःखहरण विनती	)।
सांगीतमैनचन्द्रिका (नौटंकीकीराहमें)	=)	संकटहरण विनती	)।
जैनभजन संग्रह (चालेंभीलिखा है)	=)	बारह भावना संग्रह	)।
स्तोत्रशतक(अनेकरागोंमें१००स्तुतिहैं)	=)	समाधिमरण (एकविनती सहित)	)।
प्रश्नोत्तरमाला (चर्चाकी पुस्तक है)	-)	परमार्थजकड़ी, बा० राजुल सोरठमें	)।
तत्वार्थ सूत्रजी मूल	-)	पुकार पचीसी	)।
पंचमंगल पाठ	)॥	जैनबालगुटका (बालकोंको पढ़ाइये)	)॥
बारहमासा राजुलजी	)॥	इष्ट छत्तीसी निर्वाणकांड गाथा	)॥
बारहमासा सीता जी	)॥	बाईसपरीषह, बारह भावना सहित	)॥
बारहमासा मुनिजी	)।	प्रश्नोत्तर नेमराजुल	)॥
बारहमासा वज्रदंत	)॥	आलोचनापाठ अर्थसहित	)॥
वैराग्य भावना	)।	व्याहला नेमिनाथ	)।
अध्यात्म पचासा	)।	सामायक भाषा	)।
दश आरती	)।	सप्तऋषि पूजा	)।
निर्वाणकांड भाषा	)।	रात्रिभोजन भजन कथा	)।
धर्मपचीसी	)।	भक्तामर संस्कृत वा भाषा	-)
कृपण पचीसी	)॥	बुढ़ापे का विवाह	)॥

जैनधर्म की कुल छपीहुई पुस्तकें वा ग्रंथ इसपते सेही मिलेंगे-

लाला जैनीलाल जैन--मु० देवबन्द--जि० सहारनपुर-